

विविधतामे एकता, अथवा 'एकमे अनेक'

अध्याय

8

हे ईश्वर, हमरा प्रार्थना स्वीकार करू, जाहिसँ हम अनेकता मे एकताक
स्पर्शक आनन्द कहियो नहि गवाँ सकी।

— रवीन्द्रनाथ टैगोर

... विविधतामे एकताक सिद्धान्त जे [भारतक] लेल सदैव सामान्य रहल
अछि आ इ भारतक प्रकृति एवं अस्तित्वक लेल आवश्यक अछि।
एकमे अनेकक इ भाव भारतके अपन स्वभाव आ स्वधर्मक सुनिश्चित
नींव पर स्थापित करत।

— श्री अरबिन्दो



महत्वपूर्ण
प्रश्न



1. भारतीय परिदृश्यमे 'विविधतामे एकता'क
की अर्थ अछि?
2. भारतक विविधताक कोन पहलू सबसँ
बेसी आश्चर्यजनक अछि?
3. विविधताक अन्तर्निहित एकताकेँ हम
कोना पता लगाउ?



0681CH08

समृद्ध विविधता

जँ अहाँ रेलसँ भारतक यात्रा करैत छी तँ अहाँकेँ न केवल बदलैत परिदृश्य बल्कि कतेको अलग-अलग प्रकारक वस्त्र आ भोजन सेहो देखबामे अबैत अछि। अहाँ अलग-अलग भाषा सुनब, परिचित आ अपरिचित, आ रास्ता मे अलग-अलग लिपि देखब। अपन क्षेत्रक भीतर सेहो अहाँकेँ प्रायः भारतक अन्य भागक लोक भेटत जिनकर रीति-रिवाज आ परम्परा अलग-अलग होयत। ई भारतक समृद्ध विविधता अछि, आ ई सामान्यतः पहिल चीज अछि जे हमर देशक आगंतुकसभकेँ प्रभावित करैत अछि।

1.4 अरबसँ बेसी निवासी (विश्वक जनसंख्याक लगभग 18 प्रतिशत)क सङ्ग, एहन विविधता आश्चर्यजनक नहि अछि! 20वीं शताब्दी के अंत मे, भारतीय मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण, एकटा राष्ट्रीय सङ्गठन, देशक सभ राज्यक 4,635 समुदायक 'पीपल ऑफ इंडिया प्रोजेक्ट' नामक एकटा पैघ सर्वेक्षण कयलक। ई 25 लिपिक उपयोग करैत 325 भाषाक गणना कयलक; ई सेहो देखल गेल जे बहुत रास भारतीयकेँ प्रवासी कहल जा सकैत अछि, एहि अर्थमे जे लोक अपन जन्मस्थानक लग वा अपन मूल समुदायक सङ्ग नहि रहैत छथि।

आउ अन्वेषण करू

एकटा कक्षा गतिविधिक रूपमे, (1) कमसँ कम 5 सहपाठीक जन्मस्थान आ ओकर माता-पिताक जन्मस्थानक सूची बनाउ; (2) छात्रक मातृभाषा आ हुनका ज्ञात अन्य भाषाक सूची बनाउ। विविधताक दृष्टिसँ परिणामक चर्चा करू।

यद्यपि विविधता वास्तव मे सुन्दर अछि, मुदा एकर अर्थ निकालनाय एतेक आसान नहि अछि। एक शताब्दीसँ बेसी पहिने ब्रिटिश इतिहासकार विन्सेन्ट स्मिथ आश्चर्यचकित भेलाह,

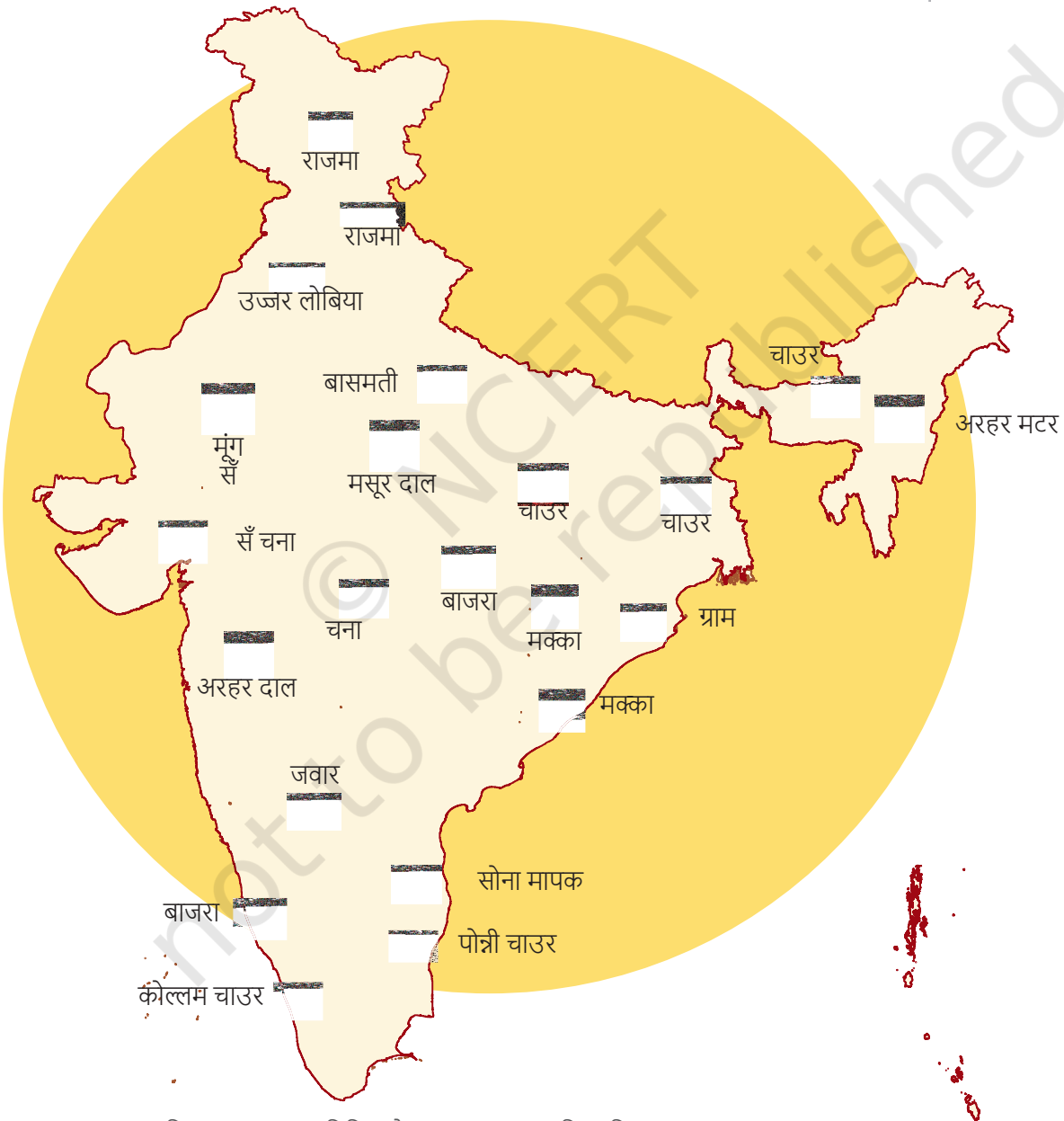


“एतेक विस्मयकारी विविधताक सामना करैत भारतक इतिहास कोना लिखल जा सकैत अछि? ... प्रश्नक उत्तर एहि तथ्य मे भेटैत अछि जे भारत विविधता मे एकता प्रदर्शित करैत अछि।”

‘विविधतामे एकता’क अर्थ की अछि? हम एहि एकता, या ‘एकमे अनेक’केँ कोना अनुभव आ व्यक्त करब? एहि प्रश्नक उत्तर देबाक लेल हम भारतीय जीवनक किछु आयामक अन्वेषण करब।

सबहक लेल भोजन

अहां मे सँ किछु गोटे भारतक अलग-अलग क्षेत्रक भोजन खयने होइ। भारतमे अहाँ जतेक अलग-अलग व्यंजन आ पकवानक स्वाद लऽ सकैत छी ओकर संख्या लाखमे नहि तँ हजारमे अवश्य होयबाक चाही! तैयो किछु खाद्यान्न देशक लगभग प्रत्येक भागमे सामान्य अछि - अनाज जेना चाउर, जौ आ गहूम; बाजरा , ज्वार, रागी; आ दालि ,एहि सबके 'मुख्य अनाज' कहल जाइत अछि



चित्र 8.1। भारतक विभिन्न क्षेत्रक अनाज आ दालिक किछु उदाहरण

किएक ई अधिकांश भारतीयक लेल मूल भोजन अछि (चित्र 8.1 पृष्ठ 127 पर)। तहिना किछु सामान्य मसल्ला जेना हरद, जीरा, इलायची आ आदक उपयोग सेहो पूरा देशमे कयल जाइत अछि।

त हम देखैत छी जे ओही सामग्री केना अछि (एकता) कतेको संयोजनमे उपयोग कएल जाए सकैत अछि (विविधता) अंतहीन किस्म के व्यंजन तैयार करए के लेल!

आउ अन्वेषण करू

एकटा कक्षाक गतिविधिक रूपमे, ओहि सामग्री (अनाज, मसाला, आदि) के सूची बनाउ जे अहाँक घरमे उपयोग कयल जाइत अछि।

कोनो एकटा तरकारी लिय आ सोचू जे एकरा संग अहाँ कतेक अलग-अलग व्यंजन तैयार कऽ सकैत छी।

वस्त्र आओर परिधान



चित्र 8.2। एकटा पाथरक राहत वैशाली (आइ बिहारमे) सं साड़ी पहिरने महिला

भारतक प्रत्येक क्षेत्र आ समुदाय वस्त्र आ परिधानक अपन शैली विकसित कयलक अछि। तइयो किछु पारम्परिक भारतीय परिधान मे समानता देखैत छी, चाहे उपयोग कयल गेल सामग्री कोनो हो। एकटा स्पष्ट उदाहरण वस्त्रक सादा लम्बाई छैक जकरा साड़ी कहल जाइत छैक, जे भारतक अधिकांश भागमे पहिरल जायवला एकटा प्रकारक वस्त्र छैक आ अलग-अलग वस्त्रसँ बनाओल जाइत छैक - अधिकांशतः सूती या रेशम, मुदा आइ-काल्हि कृत्रिम वस्त्र सेहो। बनारसी, कांजीवरम, पैठनी, पाटन पटोला, मुगा वा मैसूर रेशमक किछु प्रसिद्ध प्रकारक साड़ी अछि। कतेको आओर प्रकारक सूती साड़ी अछि। कुल मिला कऽ ई वस्त्रक बिना सिलाएल टुकड़ा सैकड़ो किस्ममे अबैत अछि। ई बुनाई (दहिना दिस चित्र 8.3) आ डिजाइनिंगक

विभिन्न तरीकासँ उत्पन्न होइत अछि।
किछु डिजाइन वस्त्रक हिस्सा होइत
अछि, जखन कि किछु वस्त्र बुनलाक
बाद छापल जाइत अछि। अन्तमे, रङ्गमे
अंतहीन भिन्नता अछि, जे अनेक प्रकारसँ
उत्पन्न होइत अछि।
रंगद्रव्य के।

साड़ीक एकटा लम्बा इतिहास अछि।
किछु शताब्दी सा.सं.पू. वैशाली (आइ
बिहारमे) पथर पर उकेरल गेल आकृति
मे साड़ी पहिरल स्त्री दर्शाएल गेल अछि।
(चित्र 8.2, पृष्ठ 128)

आउ अन्वेषण करू

बताउ जे साड़ीक उदाहरण कोना
एकता आ विविधता दुनूकेँ प्रतिबिम्बित
करैत अछि (100-150 शब्दमे)।



चित्र 8.3। रंगीन पारम्परिक भारतीय वस्त्रक किछु नमूना।

ध्यान राखू

बहुत दिन धरि भारत दुनियाक सबसँ नीक कपासक उत्पादन करैत छल आ
भारतीय वस्त्रक निर्यात यूरोप धरि होइत छल। यूरोप मे 'छींट' नामक एकटा
सुन्दर प्रकारक मुद्रित सूती 17वीं शताब्दी मे एतेक लोकप्रिय भऽ गेल जे किछु
यूरोपीय वस्त्र के बिक्री मे तेजी सँ गिरावट आयल। अन्ततः अपन उत्पादक
रक्षाक लेल इंग्लैण्ड आ फ्रांस भारतसँ छींटक आयातपर प्रतिबन्ध लगयबाक
निर्णय लेलक!

साड़ी पहिरबाक बहुत रास तरीका अछि, किएक तँ ई एक क्षेत्रसँ दोसर क्षेत्रमे वा
एक समुदायसँ दोसर समुदायमे भिन्न होइत अछि। वास्तवमे, एकरा लपेटबाक
नव तरीकाक आविष्कार एखनो कयल जा रहल अछि। मुदा अंतमे ई एकटा
परिधान अछि - साड़ी। पछिला शताब्दीमे, भारतक कतेको यात्री एकर सादगी,

उकेरल गेल

आकृति:
एकटा डिजाइन
जे समतल
सतह सँ अलग
अछि (जे
पाथर, लकड़ी,
सिरेमिक या
कोनो अन्य
सामग्रीक भऽ
सकैत अछि)।



चित्र 8.4। महिला अक्सर कतेको लोकक लेल साड़ी लगाउ एकरा सं परे उपयोग करैत अछि पोशाक (चित्र दक्षिण भारत सँ)।



अर्थव्यवस्था, आ एकरा पहिरबाक विविध तरीकासँ आश्चर्यचकित भेलाह। एकर अतिरिक्त, महिलासभ प्रायः साड़ीकेँ परिधानसँ बेसी कतेको उपयोगक लेल रखैत छथि; उपरोक्त चित्र 8.4 मे छओ चित्र एहन किछु रचनात्मक उपयोगक वर्णन करैत अछि।

आउ अन्वेषण करू

- उपरोक्त चित्रसभमे, की अहाँ पहचान सकैत छी जे साड़ीक उपयोग कोन लेल कयल गेल अछि?
- की अहाँ साड़ीक बेसी उपयोगक बारेमे जानैत छी अथवा कल्पना कऽ सकैत छी?

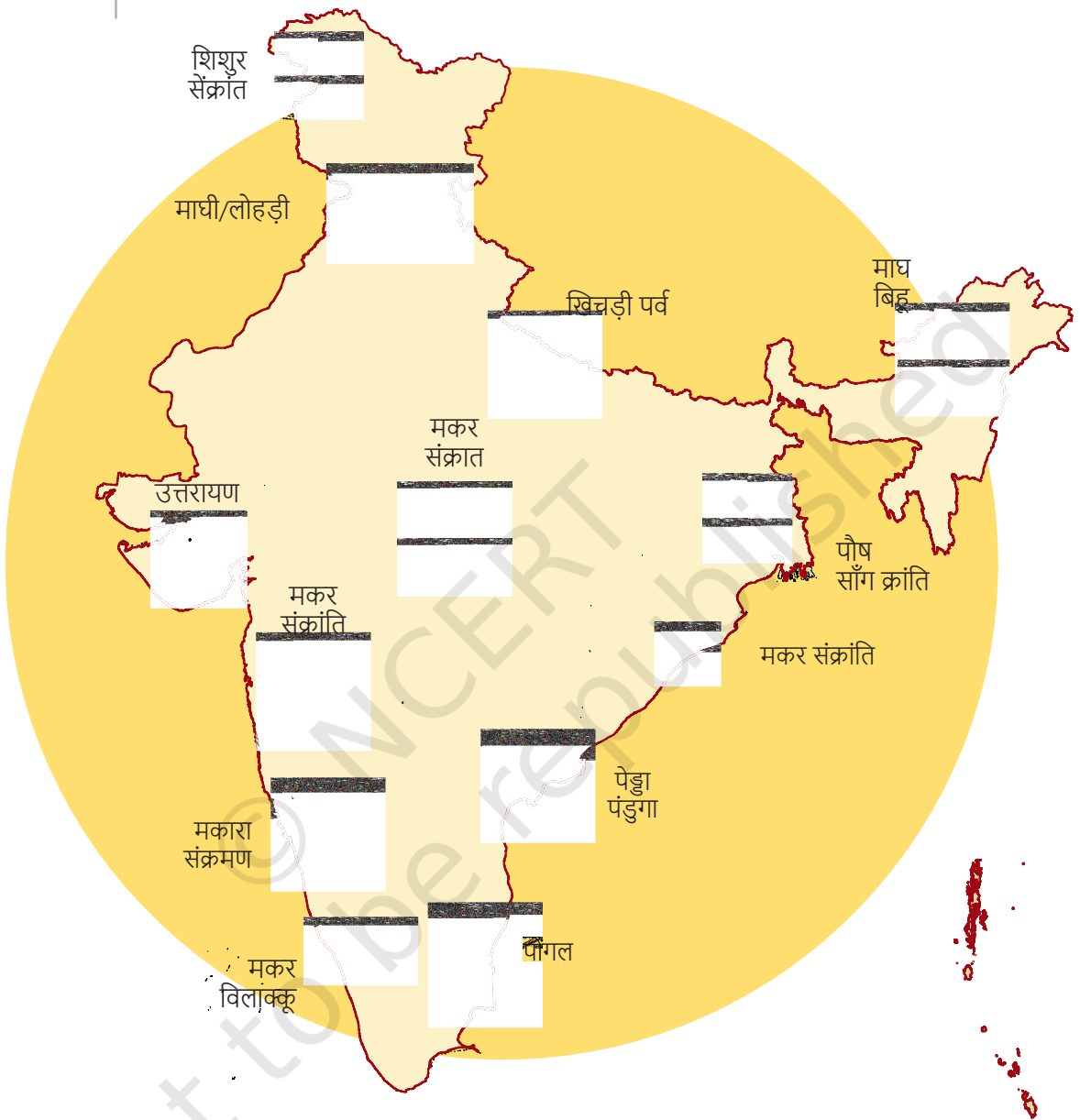


- ન સાડીક ઉદાહરણક અનુસરણ કરૈત ધોતીક લેલ દેખલ ગેલ વિભિન્ન શૈલીક સૂચી બનાઉ - વસ્ત્ર આ ધોતીક ઉપયોગ દુનૂક સંબંધમે। અહાં કોન નિષ્કર્ષ નિકાલિ સકૈત છી?

ઉત્સવક વિવિધતા

ભારતમે પાબનિ-તિહારક અપાર વિવિધતા અછિ। અહાં દેખલહું હોયત જે કિછુ સામાન્ય પાબનિ પૂરા ભારતમે લગભગ એક સજ્ઞ મનાઓલ જાઈત અછિ, યદ્યપિ ઓકર નામ અલગ-અલગ અછિ। હમસભ માત્ર એકટા ઉદાહરણ લેબ - મકર સંક્રાંતિ, જે 14 જનવરી યા ઓકર આસપાસ ભારતક કતેકો ભાગમે ફસલક

मौसमक आरम्भक प्रतीक अछि। मानचित्रमे लगभग एके तिथिक भारतभरिमे एहने पाबनि-तिहारक अलग-अलग नाम देखाओल गेल अछि।



चित्र 8.5। लगभग एके तिथि पर पूरा भारतमे एहने पाबनिक अलग-अलग नाम

आउ अन्वेषण करू

अहाँक पसंदीदा पाबनि की अछि आ ई अहाँक क्षेत्रमे केना मनाओल जाइत अछि? की अहाँ जनैत छी जे ई भारतक कोनो आन भागमे मनाओल जाइत अछि, शायद कोनो भिन्न नामसँ?

- अक्टूबर-नवम्बरक अवधिमे भारतमे बहुत रास प्रमुख पाबनि होइत अछि। देशक विभिन्न भागमे किछु मुख्य आ ओकर विभिन्न नामक सूची बनाउ।

महाकाव्यक विस्तार

साहित्य हमरा सभकेँ विविधतामे एकताक एकटा आओर नीक चित्रण प्रस्तुत करैत अछि। भारतीय साहित्य अत्यंत विविध अछि (आ दुनियामे सबसँ बेसी प्रचुर मात्रामे)। शताब्दीसँ भाषा, तकनीक आदिमे अन्तरक अछैतो ओ लोकनि महत्त्वपूर्ण विषय आ चिन्ताकेँ साझा कयलनि अछि। उदाहरणक लेल, पंचतन्त्रक विषयमे के नहि सुनलक? पशुक मुख्य पात्रक रूपमे रमणीय कथाक ई संग्रह हमरा सभकेँ महत्त्वपूर्ण जीवन कौशल सिखबैत अछि। मूल संस्कृत ग्रन्थ कमसँ कम 2,200 वर्ष पुरान अछि, मुदा एकर कथासभकेँ लगभग प्रत्येक भारतीय भाषामे रूपान्तरित कयल गेल अछि। वास्तवमे, ओ सभ भारतसँ आगू बढ़ि दक्षिण पूर्व एशिया, अरब दुनिया आ यूरोप धरि नीक यात्रा कयने छथि, जाहिसँ बाटमे कथाक नव संग्रहकेँ प्रेरणा भेटल अछि - ई अनुमान अछि जे एकर लगभग 200 रूपांतरण। पंचतन्त्र 50 सँ बेसी भाषामे अछि! एहिसँ पता चलैत अछि जे कोना 'एक' कथा संग्रह 'कतेक' भऽ गेल अछि।

यद्यपि भारतक सबसँ उल्लेखनीय, तथापि, दूटा **महाकाव्य** अछि। — रामयान आ महाभारत।

ई दूनु लम्बा संस्कृत कविता, जे एक सङ्ग अपन मूल संस्करणमे लगभग 7,000 पृष्ठ भरि सकैत अछि, धर्मकेँ पुनः स्थापित करबाक लेल लड़निहार नायकसभक कथा बतबैत अछि। महाभारतमे पाण्डव कृष्णक सहायतासँ अपन राज्यकेँ पुनः प्राप्त करबाक लेल अपन पितियौत भाइ कौरवसँ लड़ैत छथि। रामयानमे राम अपन भाय लक्ष्मण आ हनुमानक सहायतासँ राक्षस रावणकेँ पराजित करैत छथि, जे हुनक पत्नी सीताक अपहरण कयने छलाह। एहि कथासभमे बहुत रास छोट कथा अछि जे मूल्य पर ध्यान केन्द्रित करैत अछि, आ लगातार प्रश्न पूछैत अछि जे की सही आ की गलत अछि।

महाकाव्य:

एकटा नमहर कविता जे सामान्यतः नायक आ अतीतक अन्य महान व्यक्तित्वक रोमाञ्चक वर्णन करैत अछि।



चित्र 8.6। रामयानक एकटा प्रमुख प्रकरणक चित्रण करयवला एकटा चित्र
(18^थ शताब्दी, हिमाचल प्रदेश)

आउ अन्वेषण करू

पृष्ठ 134 पर चित्र 8.6 मे देखाओल गेल प्रसंगके चिन्हबाक प्रयास करू आ ओहिसँ जुड़ल महत्वपूर्ण विवरणक कक्षामे चर्चा करू।

दू सहस्राब्दीसँ बेसी समयसँ एहि दुनू महाकाव्यक भारत आ ओहिसँ बाहर क्षेत्रीय साहित्यमे अनुवाद वा रूपान्तरित कयल जा रहल अछि। एकर अतिरिक्त, एकर अनगिनत लोक संस्करण अछि। किछु साल पहिने एकटा विद्वान अकेले तमिलनाडुमे एकटा सर्वेक्षण कयलनि आ "[महाभारतक] लगभग सौ संस्करण गिनलनि जे लोककथाक रूपमे हमरा लग आयल अछि।" कल्पना करू जे पूरा भारतक लेल ई संख्या कतेक भऽ सकैत अछि!

वास्तवमे, बहुत रास समुदायक रामयान आ महाभारतक अपन संस्करण अछि। ओ लोकनि अपन इतिहासकें एहि महाकाव्यसँ जोड़य बला किंवदन्तीकें सेहो संरक्षित कयलनि अछि। ई विशेष रूपसँ भारतक कतेको भागमे जनजातीय समुदायक लेल सत्य अछि, जेना भील, गोंड, मुण्डा आ कतेको आओर। कश्मीर

सहित भारतक पूर्वोत्तर आ हिमालयी क्षेत्रक अधिकांश जनजातिक दुनू महाकाव्यमेसँ कोनो न कोनो वा दुनूक अपन संस्करण रहल अछि। ई जनजातीय रूपांतरण मौखिक रूपसँ प्रसारित कयल जाइत अछि, संगहि एहि बातक किंवदन्तीक सङ्ग जे कोना रामयान आ महाभारतक नायक (सामान्यतः पाँचो पाण्डवमे सँ कोनो वा सभ, हुनक पत्नी द्रौपदी, मुदा कखनो काल हुनक पितियौत बहिन आ विरोधी दुर्योधन) जनजातिक सम्बन्धित क्षेत्रक भ्रमण कयलनि।



मानवविज्ञानी के.एस. सिंह 'पीपल ऑफ इंडिया' परियोजनाक निर्देशन कयलनि जकर हम पहिने उल्लेख कयने छलहुँ (पृष्ठ 126 देखू)। महाभारतक मामिलामे ओ टिप्पणी कयलनि, "देशमे शायद ही कोनो एहन स्थान होयत जतय पांडव सन महाकाव्य नायक लोककथाक अनुसार नहि गेल छलाह।" आ रामयानक विषयमे सेहो इएह कहल जा सकैत अछि। शताब्दिमे, संभवतः कोनो आन ग्रन्थक तुलनामे, ई दुनू महाकाव्य पूरा भारत आ एशियाक कतेको भागमे सांस्कृतिक संवादक घना जाल बनौलक। विविधतामे एकताक एकटा आओर उदाहरण।

एहि अध्यायक विषयकेँ आओर स्पष्ट करबाक लेल हम अपन यात्रा जारी राखि सकैत छी आ भारतीय संस्कृतिक आओर पहलू दिस रुख कऽ सकैत छी। उदाहरणक लेल, शास्त्रीय वास्तुकला सहित भारतक शास्त्रीय कलामे विविधता आ एकता दुनू सहजतासँ ध्यान देल जा सकैत अछि। (अहां कला पाठ्यचर्या के दौरान एहि क्षेत्र के अध्ययन करब।)

अन्तमे, हमसभकेँ ई याद रखबाक चाही जे भारतीय संस्कृति विविधताकेँ एकटा संवर्धनक रूपमे मनबैत अछि, मुदा ओहि अन्तर्निहित एकताक दृष्टि कहियो नहि छोड़ैत अछि जे ओहि विविधताकेँ पोषण दैत अछि।

चित्र 8.7। 'पाछा पांडव',
तमिलनाडुक नीलगिरीक जंगलमे एकटा
नक्काशीदार पाथर, जाहिमे पाँच पाण्डव
भाइक चित्रण अछि। एहि पाथरवला मन्दिरक
रखरखाव इरुला आदिवासी लोकनि द्वारा
पाण्डवक गुजरबाक स्मरणमे कयल जाइत
अछि।
†ओ क्षेत्र।

आगू बढ़ला सँ पहिले...

- भारत अपन परिदृश्य, लोक, भाषा, परिधान, भोजन, पाबनि आ रीति-रिवाजमे अपार विविधता प्रदान करैत अछि।
- कतेको क्षेत्रमे विविधताक अनुभव करब आसान अछि, मुदा एकटा अन्तर्निहित एकता सेहो अछि।
- भारतक एकता विविधताक उत्सव मनबैत अछि किएक तँ विविधता विभाजित नहि होइत अछि - ई समृद्ध करैत अछि।

प्रश्न, गतिविधि आओर परियोजना

1. अध्यायक प्रारंभमे दुनू उद्धरण पर कक्षा मे चर्चा करू।
2. एहि पाठ्यपुस्तकक प्रारंभिक पृष्ठमे राष्ट्रगान आ ओकर अनुवाद पढ़। अहां विविधता कतए देखैत छी? आ एकता कतए अछि? एहि पर दू या तीन अनुच्छेद लिखू।
3. पंचतन्त्रसँ किछु कहानी चुनू आ चर्चा करू जे ओकर संदेश आइयो कोना वैध अछि। की अहां अपन क्षेत्रक एहने कोनो कहानी जनैत छी?
4. अपन क्षेत्रक किछु लोक कथा एकत्रित करू आ ओकर सन्देशपर चर्चा करू।
5. की कोनो प्राचीन कथा अछि जकरा अहाँ कलाक कोनो रूपक माध्यमसँ चित्रित होइत देखलहुँ अछि? ई मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्य प्रदर्शन, सिनेमा भऽ सकैत अछि। अपन सहपाठी सँ चर्चा करू।
6. भारतक पहिल प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरूक निम्नलिखित उद्धरण पर कक्षामे चर्चा करू, जखन ओ स्वतन्त्रतासँ पहिने भारतक कतेको भागक यात्रा कयलनि-

“सभ ठाम हमरा एकटा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भेटल जे हुनकर जीवन पर शक्तिशाली प्रभाव छोड़ने छल। ... भारतक पुरान महाकाव्य, रामायण आ महाभारत आ अन्य पोथी, लोकप्रिय अनुवाद आ वाक्यांशमे, जनमानसक बीच व्यापक रूपसँ जानल जाइत छल, आ ओहिमे प्रत्येक घटना आ कथा आ नैतिक लोकप्रिय मस्तिष्क पर उत्कीर्ण छल आ एकरा समृद्धि आ सामग्री दैत छल। अनपढ़ गामक लोक सैकड़ो श्लोककें हृदयसँ जानैत छलाह आ हुनक गप्प-सप्प ओकर सन्दर्भसँ भरल होयत वा कोनो पुरान क्लासिकमे निहित नैतिकताक सङ्ग कोनो कथाक सन्दर्भ होयत।”